दिनांक :- 20-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

स्नातक - प्रथम खंड कला

विषय - इतिहास प्रतिष्ठा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

इकाई - दो

पत्र - एक

अध्याय :- सिंधु घाटी की सभ्यता -

बाह्य व्यापार से संबंधित देश -

मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान, बहरीन, ओमान सीरिया आदि

आयात

अलवास्ट (अर्द्ध कीमतीपत्थर) डामर, विट्टमिन) ताँबा बलूचि

स्तान से डामर, चाँदी, मेसोपोटामिया से

चाँदी टीन, सीसा, फिरोजा, लाजवर्द मणि - अफगानिस्तान तथा

ईरान से अलवास्ट, ताँबा (खेतरी की खान) से शीशा - राजस्थान

से लाजवर्द मणि - बदक्शा

शँख तथा घोंघे तथा फारस की खाड़ी - पश्चिमी भारती कूट

सोना (पेस्की महोदय के अनुसार) - कोलार (मैसूर)
ताँबा - मद्रास
बहुमूल्य पत्थर - कश्मीर तथा काठियावाड़ से

निर्यात :- लोथल से बनी सीप की वस्तुएँ, हाथी दाँत की वस्तुएँ, तैयार माल
कपास
अनाज का भी निर्यात होता था।
व्यापार संतुलन हड़प्पा सभ्यता के पक्ष में था।
हड़प्पा सभ्यता में मेसोपोटामिया की वस्तुओं का नाम था। जाना इस तथ्य का संकेतक है कि परंपरागत रूप से मेसो पोटामिया के लोग कपड़े, ऊन, खुशबूदार तेल और चमड़े का उत्पाद बाहर भेजते थे। चूँकि ये वस्तुएँ जल्दी नष्ट हो जाती थीं। अतः ये हड़प्पा सभ्यता में प्राप्त नहीं होती हैं।
बाह्य व्यापार की प्रकृति मुख्यतः समृद्ध लोगों की आवश्यकता से प्रेरित थी। अतः इस व्यापार में रोजमर्रा में व्यवहार होने वाली वस्तुएँ नहीं होती थीं।
महत्वपूर्ण बंदरगाह
लोथल, रंगपुर, प्रभासपाटन (गुजरात तट) बालाकोट

सुत्कगेंडोर, बलूचिस्तान

बलूचिस्तान यद्यपि आर्थिक रूप से सम्पन्न क्षेत्र नहीं था तथापि यहाँ के बंदरगाहों की अहमियत थी क्योंकि सिंधु एंव गुजरात क्षेत्र के बंदरगाहों के विपरीत से समुद्री लहरों से ज्यादा सुरक्षित थे। इसलिये बरसात के दिनों में बलूचिस्तान से जहाज खुलते थे

लोथल एक ज्वारीय बंदरगाह था।

परिवहन के साधन : मुख्यतः स्थल तथा जलमार्ग द्वारा

मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर ठीकरे के ऊपर सुमेरियन नावों का अंकन है जो समुद्री परिवहन का सूचक है।

लोथल से पक्की मिट्टी की बनी हुई नाव का नमूना पाया गया है जिसमें मस्तूल लगाने का छेद बना हुआ है। उर की खुदाई में हड़प्पा मूल का तांबे का एक श्रृंगारदान मिला है।

मेसोपोटामिया में प्रवेश का प्रमुख बंदरगाह उर ही था।

सीरिया की हमा नामक स्थान से एक श्रृंगी आकृति युक्त हड़प्पा मुहर प्राप्त हुआ है।

अन्तर्देशीय परिवहन का साधन बैलगाड़ी था

हड़प्पा तथा चान्हुदड़ो से कांसे की गाड़ी के नमूने मिले है।

हड़प्पा सभ्यता में बैलगाड़ी के पहिये ठोस होते थे।

सिंधु लिपि

सर्वप्रथम 1853 में सिंधु लिपि का साक्ष्य प्राप्त हुआ था

1923 तक पूरी लिपि प्रकाश में लाई इस लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सकता है।

कुछ विद्वान इसे द्रविड़ लिपि मानते है (फादर हैरास, टी०एस. बरो)

कुछ विद्वान इसे संस्कृत लिपि का एक रूप मानते है। रामचन्द्रण, एस. आर. राव)

कुछ विद्वान से ब्राह्मी लिपि मानते है लैंग्टन एवं हण्टर

हड़प्पाई लिपि एक भाव चित्राक्षर लिपि है जिसमें लगभग 64 मूल चिह्न है एवं 250-400 तक अक्षर हैं जो सेलखड़ी की आयताकार मुहरों, तांबे की गुटिकाओं आदि पर मिलते है।

चित्राक्षर लिपि को बाउसट्रोफेन्डम लिपि भी कहते हैं क्योंकि ऐसी लिपि दायें से बायें तथा पुनः बायें से दायें लिखी जाती है।

डॉ० मजूमदार का मानना है कि यह लिपि अत्यंत छोटे-छोटे अभिलेखों में मिलती है। उनके विचार में इसे गोमूत्री शैली कही जाती है इस लिपि से प्राप्त सबसे बड़े लेख में लगभग 17 चिह्न थे।

धौलावीरा में अभिलेख प्रकार की पट्टीका पाई गई है।

हड़प्पाई लिपि में पूरी सभ्यता के काल कोई परिवर्तन नहीं दिखता है।

मोहनजोदड़ो के किलेबंध नगर तथा निचले नगर की कई बड़ी इमारतों को पूजा स्थल समझा जाता है क्योंकि अधिकतर पत्थर की मूर्तियाँ इन्हीं इमारतों से मिली है। स्थायी मंदिर का स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिला है।

मोहनजोदड़ो के निचले नगर के एक वृहद स्मारक में एक पाषाण मूर्ति प्राप्त हुई है जो समाधि की मुद्रा में बैठी है।

वृहद स्नानागार से स्नान के महत्व का पता चलता है।

विशाल स्नानागार के निकट की एक वृहद इमारत (230×78) को पुरोहित आवास माना गया है।

पूजा पद्धति

मातृदेवी की पूजा -

हड़प्पाई बस्ती में बड़ी संख्या में पकी मृण्मूर्तियाँ मिली है

जिसमें मातृदेवियों की विभिन्न मूर्तियां शामिल है।
देवियों की पूजा सौम्य एवं रौद्र दोनों रूपों में होती थी
बलूचिस्तान स्थित कुल्ली नामक स्थान में नारी मृण्
मूर्तियों में सौम्य रूप दिखता है लेकिन बलूचिस्तान की
झोब संस्कृति से प्राप्त मूर्तियाँ रौद्र रूप में दिखती है।
जिन मूर्तियों में गर्भिणी नारी का रूपांकन है उन्हें पुत्र प्राप्ति
हेतु चढ़ाई गई भेंट माना जा सकता है।
नारी की पूजा कुमारी रूप में भी होती थी
मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मूर्ति में एक देवी के सिर पर
पक्षी पंख फैलाये बैठा है।
हड़प्पा से प्राप्त एक मुहर के दाहिने भाग में एक स्त्री
सिर के बल खड़ी है।
एक स्त्री के गर्भ से एक पौधा प्रस्फुटित होता दिखाया
गया है। संभवतः यह पृथ्वी पूजा का का प्रमाण है।

Scanned with CamScanner

शिव की पूजा :-
मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर में योगी की मुद्रा में एक व्यक्ति का चित्र है। इसके तीन मुख और दो सींग है। इसके बायी ओर बाघ और हाथी तथा दांयी ओर गैंस तथा गैंडा है। आसन के नीचे दो हिरण बैठे हुए है।
मार्शल के अनुसार वे पाशुपत शिव है।
सिंधु सभ्यता में शिव की पूजा कीरात (शिकारी) रूप में, नाग धारी रूप में धनुधर रूप में और नर्तक रूप में होती थी।
लिंग पूजा का सर्वाधिक प्रमाण हड़प्पा में मिला है।
पशु पूजा :-
मुख्य रूप से कुबड़ वाले सांड की पूजा होती होती थी। पशु पूजा वास्तविक एवं काल्पनिक दोनो रूपों में होती थी।
मुहरों में बहुधा एक ब्राह्मणी बैल चित्रित मिलता है जिसके गले के नीचे गारी झालरदार खाल लटकती दिखाई देती है।
मुहरों पर ऐसा मिथकीय जानवर भी मिलता है। जिसका अगला हिस्सा मनुष्य जैसा तथा पिछला हिस्सा शेर जैसा दिखाई देता है।